

## मनोग्रसित बाध्यता स्नायुविकृति (Obsessive-Compulsive neurosis)

मनोग्रसित बाध्यता स्नायुविकृति के दो पहलू होते हैं - मनोग्रस्ता तथा बाध्यता। रोगी में कभी एक पहलू प्रधान होता है, कभी दूसरा तथा कभी-कभी दोनों पहलू एक ही रोगी में संतुलित रूप से पाये जाते हैं। इन दोनों पहलूओं का वर्णन है -

① मनोग्रस्ता - मनोग्रस्ता से तात्पर्य एक ऐसे विचार या चिंतन से होता है जो हास्यास्पद, बेतुका तथा स्पष्टतः अर्थहीन होते हुए भी रोगी के मन में बार-बार आता है और उनकी समायोजनशीलता को प्रभावित करता है।

According to Fisher: "An obsession is a mental or implicit activity of a fairly specific nature which the individual recognizes to be irrational but over which he has little or no control."

② बाध्यता - मनोग्रस्ता जब कार्य में बदल जाता है तो उसे बाध्यता कहा जाता है। बाध्यता से ग्रसित व्यक्ति एक ही कार्य को बार-बार करता है।

कार्य करने के क्रम में व्यक्तित्व महसूस करता है कि ऐसा कार्य करने का कोई अवसर नहीं है, फिर भी वह अपने आप को उस कार्य को करने से रोक नहीं पाता है।

Ex- किसी वृक्ष के पत्ते को बार-बार तोड़ना या बंद किचे हुए ताले को बार-बार देखना कि वह बंद है या नहीं।

According to Fisher - "A Compulsion is an overt activity of persistent and fairly specific character which the individual recognizes to be irrational and incongruous with the situation in which it occurs but over which he has little or no control."

लक्षण (Symptom) - मनोग्रसित - बाध्यता स्नायुविकृति का स्वरूप कुछ ऐसा होता है जिसमें कभी मनोग्रसित विचार अधिक प्रबल होते हैं तो कभी बाध्यता से संबंधित क्रियाएँ। मनःचिकित्सकों का मत है कि मनोग्रसित विचार किना बाध्यता के हो सकते हैं परंतु बाध्यता से संबंधित कोई भी व्यवहार, मनोग्रसित विचार होने के बाद

ही उत्पन्न होता है। मनोव्यथित विचार असाधारण तथा अवैतिक कार्य, खुदकशी आदि से संबंधित होते हैं जो अवांछनीय, असंगत, आक्रामक आदि होते हैं। ऐसे विचार रोगी को अशांत एवं व्यग्र रखते हैं। वाद्यता में रोगी अनर्गल एवं निहित कार्यों को बार-बार करने के लिए वाद्यता रहता है।

Kirkley (1985) के अनुसार रोगी किसी ऐसे कार्य को बार-बार करके अपनी चिंता को कथक करता रहता है तथा आत्म-हानि को बढ़ावा देता है।

कारण :-

(1) अनुवांशिकता - ये रोग उन्हीं व्यक्तियों में तेजी से विकसित होता है जिनके माता-पिता में तीव्र अधीरता या शक्कराहट का इतिहास पहले से होता है।

(2) नियमित एवं क्रमबद्ध व्यवहार - जो व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में काफी कठोरता से नियमितता एवं क्रमबद्धता का पालन करता है, उनमें

ऐसे रोग होने की संभावना अधिक होती है। इस तरह का नियमित एवं क्रमबद्ध व्यवहार व्यक्ति के लिए एक तरह पुनर्वसन का कार्य करता है। फलतः उनमें स्नायुविकृति वाद्यता उत्पन्न हो जाता है।

(3) दोषभाव - इस तरह का रोग उन व्यक्तियों में अधिक फैलता है जिनमें दोषभाव तथा आत्म निंदा की भावना अधिक होती है। अपने इन भावनाओं से मुक्ति पाने के लिए व्यक्ति वाद्यता का व्यवहार विकसित कर लेता है।

(4) अप्रिय एवं दुखद अनुभूतियों का दमन :- किसी अप्रिय एवं दुखद अनुभूतियों को भूल जाने के प्रयास में ऐसे रोगों का विकास हो जाता है।

उपचार

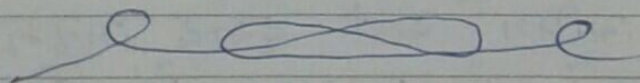
सामान्यतः इस रोग का उपचार चिकित्सा, मनोचिकित्सा, सुझाव, जैविक चिकित्सा आदि के द्वारा किया जा सकता है। इसके अलावा इस रोग का उपचार निम्नलिखित तीन तरीकों से भी किया जा सकता है -

(1) रोगी को विचार तथा क्रिया में अंतर समझाया जाता है तथा इससे उसे अवगत

करवाया जाता है कि उनके विचार तथा क्रियाएँ, अन्य लोगों के समान ही हैं।

(ii) रोगी को कान्पनिक एवं वास्तविक स्तरों के बीच अंतर करके उचित परामर्श दिया जाता है।

(iii) जब रोगी मनोव्यसित वाध्यता प्रतिक्रिया न करे तो उसे पर्याप्त पुनर्वर्तन या पुरस्कार दिया जाता है ताकि वह ऐसी प्रतिक्रियाएँ ना करना सीख जाए।



फोबिया से ग्रस्त व्यक्तियों के मध्य अतार्किक तथा असामान्य होते हैं। यह मध्य सामान्य लोगों के मध्य की अपेक्षा अधिक तीव्र होता है। रोगी यह जानते हुए कि इस प्रकार का मध्य शान्त, असंगत तथा अतार्किक है। अपने व्यवहार को परिवर्तित नहीं कर सकता। वह सोचने मात्र से मध्य का अनुभव करने लगता है। यदि मयानक परिस्थिति उत्पन्न हो जाय तो रोगी में - हृदय गति, श्वास गति तीव्र हो जाते हैं तथा कभी-कभी उनमें सिर-दर्द आदि लक्षण देखने को मिलते हैं।

कारण (Etology) - फोबिया उत्पन्न होने के निम्नलिखित कारण हो सकते हैं -

(i) चिंता का विस्थापन - दुर्भीति व्यवहार रोगी इसलिये विकसित कर लेता है कि वह अपने-आपको किसी चिंता वाले या डरावने परिस्थिति से बचा सके। फ्रायड ने ओडिपस भावना ग्रंथि को इसका कारण माना है लेकिन इसका कारण ह्वावपूर्ण परिस्थिति भी हो सकता है।

(ii) खतरनाक आवेश के प्रति सुरक्षा - किसी बाध वस्तु या उद्दीपन जो मध्य या डर उत्पन्न करता है तथा

जिसके व्यक्ति में चिंता या तनाव उत्पन्न होता है को प्रतिस्थापित करने के स्थान से नई फोबिया उत्पन्न होता है।

(ii) शिक्षण - दुर्नीति प्रतिक्रिया, अनुबंधन, सामाजिक सीखना तथा परिवर्तन-हार सीखना के द्वारा नई हो सकता है Watson and Rayner ने अलबर्ट नामक बच्चा में अनुबंधन की प्रक्रिया द्वारा चूहा से दुर्नीति (फोबिया) व्यवहार उत्पन्न किया था।

(iii) अनुबंधिकता - ये रोग इन रोगियों में अधिक पाया जाता है जिनके माता-पिता पिछले पिछले समसमय में बहुत कमजोर होता है।

उपचार (Treatment)

(i) फोबिया के रोगियों के बारे में मुक्त-साहचर्य विधि द्वारा पूर्ण जानकारी प्राप्त की जाती है तबपश्चात रोगी को फोबिया उत्पन्न करने वाले चीजों की वास्तविकता का ज्ञान कराया जाता है और अपनी चिंता से निबटने के लिए उचित प्रविधियों का ज्ञान कराया जाता है।

(ii) ऐसे रोगियों के उपचार में व्यवहार चिकित्सा अधिक लाभकारी सिद्ध होता है।

(iii) जिस रोगी में अनेक प्रकार के दुर्नीति के लक्षण पाये जाते हैं उनके उपचार के लिए आत्म निर्देशन तथा आत्म-पुनर्बलन कल्पनात्मक का उपयोग किया जाता है।